REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

प्रगतिवादी काव्य की सामाजिक दृष्टि

रेखा कुमारी
शोधकर्त्री , पी.एच.डी (हिन्दी विभाग)
रिमट विश्वविद्यालय मण्डी गोविन्दगढ़ (पंजाब)

प्रस्तावना :

मार्क्सवादी विचारधारा से अनुप्राणित साहित्यिक रचनाओं को प्रगतिवादी साहित्य की संज्ञा प्रदान की गई ।

प्रगतिवादी काव्य की संज्ञा उस काव्य को दी गई जो छायावाद के उपरान्त सन् 1936 ई0 के आसपास शोषण के विरुद्ध नई चेतना लेकर रचा गया । छायावाद की व्यक्तिवादी काव्यधारा की प्रतिक्रिया भी प्रगतिवादी काव्य के रूप में हुई ।

प्रगतिवादी सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति को ही रचना का उद्देश्य मानता है। पुरानी शक्तियां शोषक वर्ग का प्रतीक हैं जबकि नवीन शक्तियां, शोषित गरीबों, किसानों, मज़दूरों का समाज है। शोषण का विरोध प्रगतिवाद का मूल तत्व है। प्रगतिवादी कवि उस साहित्य को व्यर्थ मानता है जो समाज का सत्य नकारकर कल्पना के महल पर खड़ा किया गया है।

मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होकर काव्य रचना करने वाले कवियों में प्रमुख हैं–केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, शिवमंगल सिंह सुमन, त्रिलोचन शास्त्री, नरेन्द्र शर्मा । इनके अतिरिक्ति पन्त की कुछ कृतियां (ग्राम्या, युगान्त, गुणवाणी), निराला, दिनकर की कविताओं में भी प्रगतिवादी स्वर उपलब्ध होता है। हिन्दी में यशपाल, रांगेय राघव, राहुल सांकत्यायन प्रगतिवादी कथाकार हैं जबकि डॉ0 रामविलास शर्मा, शिवादन सिंह चौहान, प्रकाश चन्द्र गुप्त एवं अमृतराय के नाम प्रगतिवादी आलोचकों के रूप में लिए जाते हैं।

मार्क्स समाज में साम्यवादी व्यवस्था स्थापित करना चाहता था। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए वह हिंसात्मक क्रांति को साधन के रूप में स्वीकारता है। समाज को वह दो वर्गो में विभक्त करता है – शोषक एवं शोषित वर्ग । शोषक वर्ग के अन्तर्गत जमींदार, मिल मालिक, पूंजीपति, उद्योगपति एवं धनाढ्य वर्ग के लोग हैं जबकि शोषित वर्ग के अन्तर्गत किसान, श्रमिक, मज़दूर, आदि गरीब तबके के लोग हैं। शोषकों के प्रति आक्रोश एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति प्रगतिवादी साहित्यमें देखी जा सकती है। मार्क्सवाद में ईश्वर और धर्म के प्रति आस्था व्यक्त की गई तथा नारी के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण पर बल दिया गया । प्रगतिवाद साम्यवाद का पोषक है और पूंजीवाद का शत्रु है।

प्रगतिवादी कवि समाज के नवनिर्माण की प्रेरणा देते हैं और इस सामाजिक व्यवस्था को नष्ट करना चाहते हैं, जिसकी नींव शोषण पर टिकी है :

हो यह समाज चिथड़े–चिथड़े ।
शोषण पर जिसकी नींव पड़ी ।।

ये रूढ़ियों के विरोधी हैं। जो पुराना पड़ गया है उसे नष्ट हो जाना चाहिए तभी नवीन जीवन मूल्यों का विकास होगा । इसीलिए पन्त जी ने घोषणा की :

द्रुत झरो जगत के जीर्णपत्र
हे शुष्क शीर्ण हे स्रस्त ध्वस्त ।
हिमताप पीत मधुवात भीत
तुम बीतराग जड़ पुराचीन ।।

प्रगतिवादी कवि चाहते हैं कि एक ऐसे समाज का निर्माण हो जहां वर्ग भेद न हो । वस्तुतः ये समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते हैं। धर्म, जाति, भाषा, ऊँच–नीच का वर्ग भेद समाप्त होने परही ऐसे समाज का निर्माण हो सकता है। प्रगतिवादी कवि उस व्यवस्था को नष्ट करना चाहते हैं जिसमें अमीरों के कुत्ते तो सुविधाएं भोग रहे हैं और गरीब का बालक भूख से रो रहा है :

श्वानों को मिला दूध–वस्त्र भूखे बालक अकुलाते हैं।
मां की छाती से चिपक ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं। ..... दिनकर

सामाजिक विषमता को दूर करने पर प्रगतिवादी कवि विशेष बल देता है। निराला पूंजीवादियों को समाज का शोषक बताते हुए अपनी कविता 'कुकुरमुत्ता' में प्रतीकों के माध्यम से कहते हैं :

अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू रंगों आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतना रहा कैपेटलिस्ट ।

प्रगतिवादी कवि ने पीड़ित व्यक्ति की मर्म व्यथा का उद्घाटन करते हुए यथार्थ स्थिति का निरूपण निम्न पंक्तियों में किया :

बाप बेटा बेचता है भूख से बेहाल होकर ।
धर्म धीरज प्राण खोकर हो रही अनरीति बर्बर ।।
..... केदारनाथ अग्रवाल

सामाजिक समता के लिए प्रगतिवादी हिंसात्मक क्रान्ति का आह्वान करता है। न्यायोचित अधिकार यदि मांगने से न मिले तो उन्हें संघर्ष के रास्ते से हस्तगत किया जाता है :

न्यायोचित अधिकार मांगने से न मिलें तो लड़ के ।
तेजस्वी छीनते समर को जीत या कि खुद मर के ।।
किसने कहा पाप है समुचित स्वत्व प्राप्ति हित लड़ना ।
उठा न्याय का खड्ग समर में अभय मारना मरना ।।
..... दिनकर

सामाजिक विषमता को दूर करने के लिए यदि हिंसा आवश्यक हो तो प्रगतिवादी उसे बुरा नहीं मानते । सुख के साधनों पर किसी एक का एकाधिकार उसे स्वीकार्य नहीं है :

शान्ति नहीं तब तक जब तक सुख भाग न नर का सम हो ।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो नहीं किसी को कम हो ।।
..... दिनकर

इन कवियों ने जीवन के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण को अपनाया । पीड़ित मानवता के प्रति सहानुभूति इनके काव्य का प्रमुख विषय है। पन्त जी ने अपनी प्रगतिवादी कविता 'ताज' में कहा है कि जब मानव भूखा, नंगा एवं आवासविहीन हो तब ताजमहल जैसी संगमरमर की इमारतें बनवाने का क्या औचित्य है ? जीवित जन के लिए झोंपड़ी नसीब नहीं और मरे हुए लोगों की याद में संगमरमर के भवन बनवाए जाएं यह कहां का न्याय है :

हाय ! मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन ।
जब विषण्ण निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन ।।
स्फटिक सौध में हो श्रृंगार मरण का शोभन ।
नग्न, क्षुधातुर, वास विहीन रहें जीवित जन ।।

प्रगतिवादी कवि एक ऐसी तान सुनाना चाहता है जो उथल–पुथल मचा दे। वस्तुतः इनकी सामाजिक चेतना अति मुखर है। समतामूलक समाज की स्थापना करना ही प्रगतिवादी का प्रमुख लक्ष्य है। उनकी सम्पूर्ण मान्यताएं इसी लक्ष्य की ओर केन्द्रित हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 नागेन्द्र सह–सम्पादन डॉ0 सुरेशचन्द्र गुप्त – हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. आधुनिक हिन्दी शिक्षण विधियां – एम0 एम0 भाटिया वरिष्ट हिन्दी अध्यापक राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अमृतसर।
3. हिन्दी शिक्षण – प्रीतम प्रसाद शर्मा महेश चन्द्र गुप्ता
4. हिन्दी मातृभाषा/भाषा शिक्षण – रामदत्त शर्मा एम.ए.एम.ए. उपजिला शिक्षा अधिकारी भरतपुर

LBP PUBLICATION